DR. VENKAPPA AMBAJI SUGATEKAR

Dr. Venkappa Ambaji Sugatekar is a distinguished Gondhali folk artist from Karnataka. He is renowned for his profound contributions to preserve and promote the Gondhali folk music tradition with a career spanning over seven decades. He possesses an exceptional memory and has mastered thousands of folk songs, including Dasar Pada, Santha Shishunalar Pada, Vachan Sahitya, Devi Pada.

2. Born on 1st May, 1943, Dr. Sugatekar began performing from the age of 10. He has dedicated over seventy one years to performing Gondhali Folk Music and storytelling, captivating audiences with his unique style and deep knowledge of the art form. He knows over 1,000 songs and 150 long form stories of mythology by rote. He has trained over 1,000 students free of cost, ensuring the transmission of Gondhali traditions to younger generations. He has actively engaged with both rural and urban audiences, ensuring the wide spread appreciation of Gondhali Folk Traditions.

3. Dr. Sugatekar unwavering commitment to Gondhali Folk Music has not only preserved a vital aspect of Karnataka's Cultural Heritage but has also inspired countless individuals to appreciate and continue this tradition. His work has been instrumental in keeping this traditional art form alive, especially among younger generations. Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi praised Dr. Sugatekar during his 110th "Man Ki Baat" address, highlighting his efforts in reviewing and sustaining Karnataka's Folk Traditions. Hon'ble Prime Minister described him as a "Cultural Torch Bearer" who has dedicated his life preserving India's rich cultural heritage.

4. Dr. Sugatekar has performed extensively across Karnatka, spreading awareness about this traditional art form. His performances often include devotional songs, storytelling, cultural narratives that reflect the rich heritage of Karnataka. He is celebrated as a living legend of Karnataka's Folk Music. His work has not only preserved Gondhali Folk Art but also inspired countless artists to take up this traditional form. At the age of 82, he continues to be an active cultural ambassador, ensuring that the legacy of Gondhali Folk Art remains vibrant and relevant. His life and works stand as testament to the power of cultural preservation and the enduring impact of traditional art forms in modern times.

4. Dr. Sugatekar has been awarded Honorary Doctorate in 2022 by Karnataka Folklore University and Government of Karnataka awarded Janapadshri award in 2017. He was awarded Rajyotsava Award in 2012, Karnataka Satate Senior Citizen Award in 2022 and Karnataka Janapad Yakshagana Academy Award in 2004. He has received more than 30 dignified awards.

डॉ. वेंकप्पा अंबाजी सुगतेकर

डॉ. वेंकप्पा अंबाजी सुगतेकर कर्नाटक के एक प्रतिष्ठित गोंधली लोक कलाकार हैं। वे इस क्षेत्र में सात से अधिक दशकों से काम कर रहे हैं और गोंधली लोक संगीत परंपरा के संरक्षण और इसे बढ़ावा देने में अपने गहन योगदान के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी स्मरण शक्ति असाधारण है और उन्हें दासर पद, संथा शिशुनालार पद, वचन साहित्य, देवी पद सहित हजारों लोक गीतों में महारत प्राप्त है।

2. 1 मई, 1943 को जन्मे, डॉ. सुगतेकर ने 10 वर्ष की आयु से ही प्रदर्शन करना शुरू कर दिया था। इन्होंने गोंधली लोक संगीत और कहानी सुनाने की इस कला को 71 वर्ष से अधिक समय दिया है और अपनी अनूठी शैली और कला के इस प्रारूप के गहन ज्ञान से दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया है। इन्हें 1,000 से अधिक गाने और पौराणिक कथाओं की 150 लंबी कहानियाँ याद हैं। इन्होंने 1,000 से अधिक छात्रों को निःशुल्क प्रशिक्षण दिया है, जिससे गोंधली परंपराओं को युवा पीढ़ी तक पहुँचाया जाना सुनिश्चित हुआ है। वह ग्रामीण और शहरी दोनों तरह के दर्शकों के साथ सक्रिय रूप से जुडे रहे हैं, इससे गोंधली लोक परंपराओं को काफी अहमियत प्राप्त हुई है।

3. डॉ. सुगतेकर की गोंधली लोक संगीत के प्रति अटूट प्रतिबद्धता से न केवल कर्नाटक की सांस्कृतिक विरासत के एक महत्वपूर्ण पहलू को संरक्षण मिला है, बल्कि अनगिनत लोगों ने इस परंपरा के महत्व को पहचाना और इसे जारी रखने के लिए प्रेरित भी हुए हैं। इनका यह काम इस पारंपरिक कला रूप को, खासकर युवा पीढ़ी के बीच जीवित रखने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ है । माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने "मन की बात" में अपने 110वें संबोधन के दौरान डॉ. सुगतेकर की प्रशंसा की और कर्नाटक की लोक परंपराओं की समीक्षा और उनके अनुरक्षण में इनके प्रयासों के बारे में बताया। माननीय प्रधान मंत्री ने इन्हें "सांस्कृतिक मशाल वाहक" बताया, जिन्होंने भारत की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है।

4. डॉ. सुगतेकर ने कर्नाटक में इस पारंपरिक कला के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए बड़े पैमाने पर प्रदर्शन किया है। इनके प्रदर्शनों में प्रायः भक्ति गीत, कथावाचन, सांस्कृतिक कथाएँ शामिल होती हैं जो कर्नाटक की समृद्ध विरासत को दर्शाती हैं। डॉ. सुगतेकर कर्नाटक के लोक संगीत की दुनिया में जीवित किंवदंती बन गए हैं। इनके काम से न केवल गोंधली लोक कला को संरक्षण मिला है, बल्कि अनगिनत कलाकार इस पारंपरिक लोककला को अपनाने के लिए प्रेरित भी हुए हैं। 82 वर्ष की आयु में भी उनके द्वारा एक सक्रिय सांस्कृतिक राजदूत के रूप में कार्य करते रहने से यह सुनिश्चित हुआ है कि गोंधली लोक कला की विरासत जीवंत और प्रासंगिक बनी रहे। उनका जीवन और कार्य का अस्तित्व आज के युग में सांस्कृतिक संरक्षण की शक्ति और पारंपरिक कला रूपों के स्थायी प्रभाव के प्रमाण के रूप में है।

4. डॉ. सुगतेकर को वर्ष 2022 में कर्नाटक लोकगीत विश्वविद्यालय द्वारा मानद डॉक्टरेट की उपाधि से सम्मानित किया गया और कर्नाटक सरकार ने वर्ष 2017 में कर्नाटक में जनपद श्री पुरस्कार से सम्मानित किया। इन्हें वर्ष 2012 में राज्योत्सव पुरस्कार, वर्ष 2022 में कर्नाटक राज्य वरिष्ठ नागरिक पुरस्कार और वर्ष 2004 में कर्नाटक जनपद यक्षगान अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 30 से अधिक प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।